IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

संगीत की दुनिया के जादूगर नौशाद साहाब

डॉ विजया जगन्नाथ पिंजारी --शिंदे
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय पाचवड
तालुका वाई, जिला सातारा,
महाराष्ट्र राज्य ,

नौशाद साहब हिंदी फिल्म संगीत जगत की एक जानी-मानी हस्ती है। एक जमाने में यह हिंदी फिल्मों के एक प्रसिद्ध संगीतकार थे। पहली फिल्म में संगीत देने के 64 साल बाद तक अपनी साज का जादू बिखरे रखने के बावजूद नौशाद साहब ने केवल 67 फिल्मों में ही संगीत दिया लेकिन अपना कौशल, इस बात का जीता जागता मिसाल है की नौशाद साहब की गुणवत्ता संख्या बल से कई अधिक श्रेष्ठ है।

सिनेमा दूरदर्शन एवं अन्य माध्यमों में संगीत का प्रयोग सोने में सुहाग जैसा है। 130 साल की सिनेमा जगत की परंपरा को देखे तो सिनेमा जगत में कई उतार-चढ़ाव आए। उनमें संगीत ने मीडिया से कदम पर कदम मिलाकर अपनी अहम भूमिका निभाई। आरंभ में फिल्मों के शो के दौरान लाइव संगीत बचता था। थिएटर के मालिक या फिल्म निर्माता सितार वायलिन, क्लैरिनेट , पियानो, हारमोनियम, तबला आदि बजानेवाले कलाकारों को नियुक्त करते थे। उस समय संगीत कलाकारों के सामने फिल्म दिखाई जाती थी और उसी के मुताबिक नोटेशन तैयार करते थे। यानी फिल्म निर्माण के बाद उसकी रिहर्सल संगीत कलाकारों के सामने होती थी। बाद में स्थितियों को ध्यान में रखकर संगीत तैयार करना पड़ता था। हर कलाकार के यह बात बस की नहीं हुआ करती थी। जब फिल्म प्रदर्शित होती तब कलाकारों को स्क्रीन के सामने बिठाकर प्रसंग के अनुसार संगीत तैयार किया जाता था।

❖ नौशाद का व्यक्तित्व

नौशाद का 25 सितंबर 1919 को लखनऊ में मुंशी वाहिद अली के घर जन्म हुआ था। उनके पिताजी लखनऊ में एक कोर्ट में क्लर्क का काम किया करते थे। 10 साल की उम्र में नौशाद चार आने देकर और किसी तरह से टिकट लेकर आर्केस्ट्रा के सामने बैठकर फिल्मों का गीत सुना करते थे। शो खत्म होने के बाद घर वापस आने में उन्हें देर होती, तब घर के लोग उन्हें प्रताड़ित करते थे। बचपन से ही इस महान शख्स का रुझान संगीत की ओर था। परिवार में संगीत की कोई पृष्ठभूमि नहीं थी। पिता चाहते थे। बेटा पढ लिखकर बडा बने। अपने पैरों पर खड़ा हो जाए लेकिन लखनऊ के करीब बाराबंकी के मेले में नौशाद कव्वालियां सुनने हमेशा जाया करते थे । वहां से ही उन्हें संगीत का रुझान अपनी और अधिक खींचने लगा। नौशाद हिंदी सिनेमा के फैन तब से थे जब मुख फिल्में बना करती थी। 1931 में भारतीय सिनेमा में आवाज आई उस समय नौशाद 13 साल के थे। नौशाद मुस्लिम परिवार से थे इसलिए उनके संगीत सीखने पर पिताजी अक्सर पाबंदियॉ लगते थे । नौशाद के पिता ने उन्हें सख्त हिदायत दी थी की अगर घर रहना है तो तुम्हें संगीत छोड़ना पड़ेगा लेकिन नौशाद ने उनकी एक नहीं मानी वह बम्बई 1937 में आखिरकार 17 साल की उम्र में वह घर से भाग कर संगीत की दुनिया में अपनी किस्मत आजमाने के लिए मुंबई चले गए। उनके पांव और ख्वाब उनके पिता कभी रोक सके। वहां उन्हें दादर में शिफ्ट होना पड़ा। विंडसर कंपनी यहाँ लेना है । उनके प्रारंभिक दिनों में संघर्ष का सामना करते हुए उन्हें फुटपाथ पर भी सोना पड़ा।

❖ संगीत की दुनिया का शुरुआती सफर

नौशाद ने अपने शुरुआती दिनों में एक पियानो वादक के रूप में काम किया। नौशाद संगीतकार उस्ताद झंडे खान के साथ 40 रुपए महीने पगार पर काम किया करते थे। इसके बाद कंपोजर खेमचंद प्रकाश ने उन्हें फिल्म कंचन में असिस्टेंट के रूप में काम पर रखा। तब नौशाद को महीने के 60 रूपिये मिला करते थे। नौशाद खेमचंद को अपना गुरु मानते थे। उन्हें पहली बार 1940 में एक संगीतकार के रूप में काम करने का मौका फिल्म 'प्रेम नगर में' मिला। किसी कारणवश यह फिल्म रिलीज नहीं हुई। उनकी सही पहचान 1944 में आई फिल्म रतन से बनी। इसके बाद एक और फिल्म स्टेशन मास्टर भी सफल रही। नौशाद संगीत की मोतियों की माला सी भूनने लने और आगे बढ़ने लगे। नौशाद को पहली बार सुनहरी मकड़ी फिल्में हारमोनियम बजाने का अवसर मिला। यह फिल्म पूरी नहीं हो सकी लेकिन नौशाद का सुनहरा सपना और उनका सफर शुरू हुआ। इसी बीच गीतकार दीनानाथ मधोक से उनकी मुलाकात हुई। यह हस्ती फिल्म इंडस्ट्री में नौशाद का परिचय कई लोगों को करवा चुकी। इसी कारण प्रारंभिक दिनों में नौशाद को छोटा-मोटा काम मिलता रहा। नौशाद संगीत के जादूगर थे। वह चुप बैठनेवालों में से नहीं थे। 1954 में फिल्म 'बैजू बावरा' का संगीत नौशाद ने दिया और इसी साल का बेस्ट म्यूजिक डायरेक्टर का फिल्म फेयर अवार्ड भी नौशाद साहब को मिला।

जीस सिनेमा घर के सामने की फुटपाथ पर नौशाद साहब बैठा करते थे। सोया करते थे। वहीं पर उन्होंने एक सपना देखा था। एक दिन इस सिनेमाघर में उनकी कोई फिल्म लगेगी। आज वह उनका सपना साकार हुआ। काफी वक्त लगा। बैजू बावरा जब रिलीज हुई तो वहां रिलीज के समय नौशाद ने कहा। "इस सड़क को पार करने में मुझे 17 साल लग गए"। एक सफल संगीतकार की शुरुआत सही मायने में यही से हुई थी।

❖ नौशाद और विंडसर म्यूजिक एंटरटेनर्स कंपनी -

नौशाद ने अपने चुनिंदा कलाकारों को साथ लेकर 'विंडसर म्यूजिक एंटरटेनर्स कंपनी' कि स्थापना की। इंडियन स्टार थिएटर कंपनी जो कि एक थिएटर था और वह लखनऊ की गोलागंज कॉलोनी में स्थित था। उसका नौशाद ने नेतृत्व किया। उन्हें उसे समय लड्डन खान से प्रशिक्षण लेना पड़ा। तब तक जब तक की वह स्वतंत्र रूप से एक संगीतकार के रूप में कार्य करने के लिए सक्षम नहीं थे। तब तक उनके साथ प्रशिक्षण लेकर वह सक्षम हुए और उन्होंने अपनी इस म्यूजिक कंपनी के साथ अपने सहयोगी कलाकारों के साथ पंजाब, राजस्थान, गुजरात और सौराष्ट्र जैसी जगह के दिल्ली, मुरादाबाद, जयपुर, जोधपुर, सिरोही की यात्रा की वहां के लोकगीतों में छुपी दुर्लभ संगीत की बारीकियां को समझा। पूरी तरह आत्मसात किया। अपने आप को संगीत से जोड़ने की पूरी कोशिश की यात्रा करनेवाली यह कंपनी वहॉ तक चली जहॉ तक उनके पास पैसे थे। जब पैसों की कमी हो गई तो सभी कलाकार अपने नाटकिय प्रॉप्स और संगीत वाद्य बेचकर वापस निकले। उस समय रास्ते में नौशाद के दोस्त ने नौशाद कि और उनके कलाकारों कि मदद की। उस समय उन्हें अपने वाद्य यंत्र भी बेचने पड़े और यह कंपनी वापस लखनऊ आ गई। नौशाद का संगीत के सफर में शुरुआती दिनों का एक यह भी असफल, प्रयास दिखाई देता है।

❖ नौशाद साहब की प्रेरणा एवं सहायक

हिंदुस्तानी संगीत एवं शास्त्रीय संगीत का ज्ञान उस्ताद गुरबत, उस्ताद युसूफ अली, उस्ताद बब्बन साहब खेमचंद प्रकाश और अन्य लोगों द्वारा नौशाद साहब ने प्राप्त किया। संघर्ष के शुरुआती दिनों में शास्त्रीय संगीत के रागों को सुना। लोक संगीत के आधार पर अपनी धुन बनाकर प्रस्तुत करना। यह बातें नौशाद ने इन लोगों से सीखी। खेमचंद प्रकाश को नौशाद साहब अपना गुरु मानते थे। इसके अलावा अपने पूरे जीवन में नौशाद ने कई गीतकारों के साथ काम किया। जिन में शकील बदायूंनी, मजरूह सुल्तानपुरी,डी. एन. मधोक जिया, सरहदी, युसूफली,और खुमार, बाराबंकवी आदि गीतकार उनके जीवन में सहायक के तौर पर भी नजर आते हैं। संगीत की दुनिया में नौशाद ने इन सहयोगियों को लेकर अपना काम किया है।

❖ परिवार वालों से संगीत की बात छुपाई

नौशाद ने लखनऊ में स्थित अपने परिवार से कई सालों तक अपने फिल्मी गीत एवं संगीत की बात छुपाई राखी, क्योंकि उनका परिवार नौशाद के संगीत के बिल्कुल खिलाफ था। जिस समय नौशाद की शादी हुई तब बैंड बाजे वाले नौशाद की फिल्म रतन के सुपरहिट गानों की धुन बज रहे थे और इधर नौशाद के पिता और ससुर संगीतकार की निंदा कर रहे थे। जिसने इन गानों की रचना की थी। उस समय पर भी नौशाद के अंदर यह बताने का साहस नहीं हुआ की यह वही संगीत है जिसे उन्होंने तैयार किया है।

नौशाद हिंदू मुस्लिम संस्कृति और उनकी भाषाओं की संस्कृतियों की अच्छी जान पहचान रखने वालों में से थे, जो कलाकार अपने शुरुआती दौर में एक माह की ₹40 पगार लेता थे। वही कलाकार आगे चलकर अपने एक फिल्म के गीत के लिए 25000 रुपए चार्ज करने लगे। एक समय में नौशाद साहब का संगीत इतना पॉप्युलर हुआ की 1942 से 1960 के दशक के अंत तक उनकी गिनती हिंदी फिल्मों के शीश संगीत निर्देशकों में होने लगी। उन्होंने अपने जीवनकाल में कुल 65 फिल्में की। उनमें से 26 फिल्मों ने सिल्वर जुबली किया। (25 सप्ताह चलने का जश्न मनाया।) 8 ने स्वर्ण जयंती (50 सप्ताह चलने का जश्न मनाया।) 4 ने डायमंड जुबली (60 सप्ताह चलने का जश्न मनाया।) नौशाद ने कई गीतकारों के साथ काम किया और यह सफलता हासिल की। संगीत की दुनिया में अपना नाम रोशन किया और चार चांद लगा दिए।

❖ नौशाद साहब की संगीत शैली की खासियत

१) फिल्म बैजू बावरा में नौशाद साहब ने फिल्मी गीतों में शास्त्रीय संगीत के साथ कुछ इस तरह का ताना-बाना बुना की यह नया स्टाइल काफी लोकप्रिय हुआ। उन्होंने शास्त्रीय संगीत की सभी राग विधाओं को बैजू बावरा के गीतों में समन्वित किया। इस गीत के संगीत के लिए उन्होंने आमिर खान को संगीत सलाहकार के रूप में नियुक्त किया। नौशाद साहब शहनाई से लेकर मेंडेलिन और अन्य पश्चिमी वाद्य यंत्रों के अच्छे ज्ञाता थे। पश्चिमी संगीत के मुहावरों को उन्होंने अपनी रचना में शामिल किया था। पश्चिमी शैली के आर्केस्ट्रा की रचना करना उन्हें आता था। उनके संगीत के अनुभव के कारण बाकी संगीतकारों के संगीत में उनका यह नयापन देखने को मिलता है।

२) 1940 दशक की शुरुआती दौर में आधी रात को शांत पार्क एवं उद्यानों में रिकॉर्डिंग की जाती थी। उन दिनों स्टूडियो साउंड प्रूफ रिकॉर्डिंग रूम आदि बातें नहीं हुआ करती थी। बगीचे में टीन की छतोवाले स्टूडियो में गूंजती आवाज जिसकी कोई प्रतिध्वनि और गड़बड़ी नहीं होती थी।

३) कुछ फिल्में जैसे कि 'उड़न खटोला' और 'अमर' के लिए उन्होंने एक विशेष प्रकार से कलाकार की आवाज को रिकॉर्ड किया था। यह उनकी जबरदस्त खासियत थी।

४) नौशाद पहले व्यक्ति थे जिन्होंने साउंड मिक्सिंग को फिल्मों में अलग जगह दिलवाई थी। उन्होंने आवाज को पहले अलग से रिकॉर्ड किया और बाद में म्यूजिक ट्रैक के साथ रिकॉर्डिंग करवाई । उनका यह प्रभाव काफी अलग और बेहतरीन साबित हुआ।

५) नौशाद साहब बांसुरी और शहनाई तथा सितार, मेंडेलिन को संयोजित करनेवाले भी पहले व्यक्ति थे।

६)उन्होंने आर्कोडाइल को हिंदी फिल्मों की संगीत में जगह दिलवाई।

७) फिल्म की कहानी के पात्र के मूड और संवाद के अनुसार बैकग्राउंड संगीत पर भी ध्यान केंद्रित हो सके ऐसी उनकी संगीत की रचना थी। यह संगीत रचना करना उन्होंने ही आरंभ किया।

८) नौशाद के सबसे बड़े योगदान में भारतीय शास्त्रीय संगीत को फिल्मों में लाना यह माना जाता है। उनकी रचनाएँ रागों से प्रेरित थी। इसे लोगों के बीच लोकप्रिय बनाने के लिए इन्होंने अपने संगीत के कुछ प्रतिष्ठित शास्त्रीय कलाकारों को जैसे आमिर खान, डी. बी. पलुसकर को 'बैजू बावरा' और बड़े गुलाम अली खान को 'मुग़ल-ए-आज़म' के लिए चुना था।

९) 'बैजू बावरा' मे 1952 में नौशाद कि शास्त्रीय संगीत कि समझ और उनकी क्षमता का प्रदर्शन सभी के सामने उन्होंने किया। जिसके लिए उन्होंने 1954 में पहला फिल्म फेयर सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक का पुरस्कार भी जीत लिया।

१०) नौशाद ने 'बैजू बावरा' के बारे में रिलीज से पहले मीडिया के साथ बैठक में एक टिप्पणी की थी। जब लोगों ने सुना कि फिल्म शास्त्रीय संगीत और रागों से भरी होगी तो उन्होंने विरोध किया। लोगों को सिर दर्द होगा और वह भाग जाएंगे परंतु मैं अपने निश्चय पर अडिग था। मैं लोगों का शास्त्रीय संगीत के प्रति रवैया और सोच बदलना चाहता था। नौशाद कुछ ऐसा फिल्मों में लाना चाहते थे। जो लोगों को पसंद भी आए और हमारी संस्कृति के संगीत के साथ जुड़ा हुआ भी हो। इसीलिए उन्हें अपनी संस्कृति के संगीत के साथ इसे प्रस्तुत करना पड़ा जिस बात का लोगों ने विरोध किया था इस बात को लोगों ने काफी पसंद भी किया।

११) फिल्म 'आन' 1952 के लिए वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इस फिल्म में 100 आर्केस्ट्रा का इस्तेमाल किया। हमें यकीन नहीं आता लेकिन यह उस समय की सच्चाई है।

१२) नौशाद भारत में पश्चिमी अंकन की प्रणाली को विकसित करने वाले पहले संगीतकार थे।

१३) फिल्म 'आज' के संगीत का अंकन लंदन में एक पुस्तक के रूप में उन्होंने प्रकाशित किया।

१४) फिल्म 'उड़न खटोला' 1955 में उन्होंने आर्केस्ट्रा के बिना ही एक पूरे गाने को रिकॉर्ड किया। उन्होंने संगीत वाद्य यंत्रों कि जगह गुनगुनाने कि ध्वनि को इस्तेमाल किया। यह समय की सच्चाई है।

१५) फिल्म मुग़ल-इ-आज़म 1960 का गीत ए मोहब्बत जिंदाबाद के लिए उन्होंने 100 व्यक्तियों की कोरस में इस्तेमाल किया।

१६) फिल्म के अन्य एक गीत प्यार किया तो डरना क्या के लिए उन्होंने लता मंगेशकर को बाथरूम में बंद किया और उनसे गीत गाने के लिए कहा गीत के एक हिस्से को प्रस्तुत करने के लिए कुछ उन्होंने इस प्रकार किया। उस हिस्से को गीत में गूंजता हुआ सुना था। गुंज के प्रभाव को प्राप्त करने के लिए यह उनका प्रयास था।

१७) फिल्म गंगा जमुना 1961 में उन्होंने पूरी तरह से भोजपुरी बोली में गीत का इस्तेमाल किया।

१८) इस प्रकार कुछ अलग करने की चाह हमें उन में दिखाई देती है। उन्होंने फिल्म मेरे महबूब 1963 के शीर्षक गीत में सिर्फ 6 उपकरणों का इस्तेमाल किया।

१९) 1904 में क्लासिक मुग़ल ए आज़म 1960 का रंगीन संस्करण जारी किया गया जिसके लिए आज के संगीतकारों को नौशाद के लिए एक बार फिर से एक आर्केस्ट्रा संगीत का इंतजाम किया गया (जो मूल रूप में डॉल्बी डिजिटल में था) जबकि मूल साउंडट्रेक से सभी एकल संगीत को बनाए रखा गया।

२०)नौशाद ने 86 वर्ष की आयु में एक शाश्वत लव स्टोरी ताजमहल के धुन की रचना की यह फिल्म 2005 में बनी थी।

- **नौशाद ने किए हुए कार्य**
- फिल्म निर्माता

१) बाबुल 1950
२) उड़न खटोला 1955
3) मालिक 1958 इस फिल्म के संगीत निर्देशक गुलाम मोहम्मद थे।

- **कहानीकार नौशाद**

१) पालकी 1967
२) तेरी पायल मेरे गीत 1989

- **लेखक के रूप में नौशाद**

नौशाद साहब एक उच्च श्रेणी के सम्मानित कवी भी थे। उन्होंने आथवां सुर द एट नोट नामक शीर्षक से अपनी उर्दू शायरी की किताब को औपचारिक रूप से लांच किया और नवरस लेबल ने इसे एल्बम का रूप देते हुए। इसका नाम आठवां सुर द अदर साइड आफ नौशाद इसमें इन्होंने नौशाद की 8 गजलों को लिया। इसको हौसलों के बुक फेयर और बुक मेला उत्सव के दौरान नवंबर 1998 में लॉन्च किया गया। इस एल्बम की बोल और रचना नौशाद द्वारा बनाई गई थी। हरिहरन ने इन गजलों को गया था। एवं उत्तम सिंह ने इसे व्यवस्थित किया था। इसमें आठ गजलों की सूची है।

- **टीवी धारावाहिक के लिए बैकग्राउंड म्यूजिक**

नौशाद साहब ने 1988 में टीवी धारावाहिक अकबर द ग्रेट के लिए बैकग्राउंड म्यूजिक भी तैयार किया था जो की हिंदी फिल्म अभिनेता संजय खान ,फिरोज खान ,अकबर खान के द्वारा निर्देशित किया गया था। टीपू सुल्तान की तलवार भी संजय खान, अकबर खान द्वारा निर्मित और निर्देशित फ़िल्म थी। यह लोगों के बीच बेहद लोकप्रिय धारावाहिक रही।

❖ पुरस्कारों के लिए नामांकन एवं सम्मान

१) मदर इंडिया 1957 की बेहतरीन हिंदी फिल्म थी। इसका संगीत नौशाद साहब ने दिया था। यह पहली भारतीय फ़िल्म थी। जिसे ऑस्कर पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था।

२) 1981 में नौशाद को भारतीय सिनेमा में उनके जीवनभर के योगदान के लिए दादा साहब फाल्के पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। ३)1998 में मलयालम फिल्म ध्वनि के लिए नौशाद ने एक गाना गया। जिसे पी सुशीला और के जे येसुदास ने गया। यह गीत सदाबहार सुपरहिट रहा और तीन दशकों से ज्यादा का समय बीतने के बावजूद भी यह लोगों के बीच लोकप्रिय बना रहा।

४) 1956 में बैजू बावरा फिल्म के लिए फिल्मफेयर सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक का पुरस्कार ।

५) 1961 में फिल्म गंगा जमुना के लिए सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक का पुरस्कार।

६) 1975 में नौशाद अली डॉक्युमेंट्री टेलीविजन सेंटर मुंबई द्वारा निर्मित। ७)1944 में लता मंगेशकर पुरस्कार मध्य प्रदेश राज्य सरकार द्वारा प्रदान।

८) 1987 में अमीर खुसरो पुरस्कार।

९) 1992 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार।

१०) 1992 में भारतीय सिनेमा के में उनके जीवनकाल के योगदान के लिए पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित।

११) 1993 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अवध रत्न पुरस्कार प्रदान।

१२) 1994 में महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार प्रदान।

१३) 2000 में स्क्रीन लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड।

❖ नौशाद का परिवार

नौशाद को 6 बेटियां और तीन बेटे थे। इनमें से रहमान को नौशाद ने उनकी कुछ फिल्मों में उनके सहायक के रूप में साथ लिया। नौशाद ने रहमान नौशाद द्वारा निर्देशित दो फिल्में माय फ्रेंड 1974 और तेरी पायल मेरे गीत 1989 के लिए संगीत भी तैयार किया।

❖ नौशाद साहब का निधन एवं श्रद्धांजलि

* नौशाद साहब की मृत्यु 5 में 2006 को 86 वर्ष की आयु में हृदय गति रुकने के कारण मुंबई में स्थित जुहू में मुस्लिम कब्रिस्तान में उन्हें दफनाया गया था।

* नौशाद साहब को भारतीय फ़िल्म उद्योग के सबसे सम्मानित और सफल संगीत निर्देशकों में स्थान दिया गया है।

* नौशाद ने महाराष्ट्र राज्य सरकार से हिंदुस्तानी संगीत को बढ़ावा देने के लिए एक संस्थान खोलना चाहा जिसके लिए उन्होंने सरकार से एक भूखंड को मंजूरी देने का अनुरोध भी किया उनके जीवनकाल के दौरान उसे भूखंड के लिए सरकार ने मंजूरी दे दी और “नौशाद अकादमी ऑफ हिंदुस्तानी संगीत” का गठन किया।

*नौशाद की जीवन और कार्य के ऊपर पाँच फिल्में बनी।

* जीवन संबंधी पुस्तकों की बात करें तो शशिकांत किनिकर कि “दास्तान ए नौशाद” मराठी किताब प्रकाशीत है।

* “आज गावत मन मेरा” गुजराती है। *क्षमा और सुषमा पत्रिकाओं में क्रमश नौशाद कि कहानी नौशाद कि जुबानी शीर्षक से हिंदी और उर्दू जीवनी रेखाचित्र प्रकाशित हुआ। *जिसका बाद में मराठी में अनुवाद शशिकांत किनिकर द्वारा किया गया था।

* किनिकर ने “नौशाद के नोट्स” नामक एक पुस्तक भी निकाली। जिसमें नौशाद के जीवन के कुछ दिलचस्प किस्से है।

* 2008 में बांद्रा में स्थित कार्टर रोड का नाम बदलकर उनकी स्मृति में संगीत सम्राट नौशाद अली मार्ग कर दिया गया।

नौशाद साहब जैसे भारतीय संगीत क्षेत्र की इस महान हस्ती को हिंदी फिल्म जगत कभी भूल नहीं सकता। इस महान हस्ती को मेरा शतश प्रनाम।